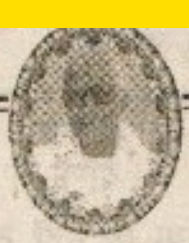

"देखी साहिबी अपनी"

प्यारे सुन्दर साथ जी, श्री इन्द्रावती जी के अन्दर विराजमान स्वयं श्री राजी महाराज हम रूहों को अपनी पहचान करवाते हुए कह रहें है, कि ए रूहों तुम अपनी साहिबी को देखो कि तुम कौन हो ?

जब रूह इस बात पर विचार करती है कि मै उस पारब्रह्म, नूरजमाल की अंगना हूँ तो रूह को अत्यन्त सुख की अनुभूति होती है कि मेरा खसम नूरजमाल है। जिनके नूर से सम्पूर्ण परमधाम है। परमधाम की एक कंकरी में इतना बल और नूर है। पूरे ब्रह्माण्ड को उड़ा सकती है। उस परमधाम के कण-कण में श्री राजी महाराज के इश्क और नूर का ही स्वरूप है। वहाँ के वन, पशु-पक्षी में उनका नूर और इश्क समाया है इसलिए धनी का दीदार मिले तो उनकी अरवाह ही निकल जाये।

परन्तु परमधाम में ऐसा नहीं हो सकता। क्योंकि ये पशु-पक्षी उनके इश्क से ही पाले-पोसे हैं। एक चिड़िया में भी उतना ही बल है, जितना कि एक हाथी में, वो परमधाम के नूरमयी, इश्कमयी नजारे, परमधाम के वो पच्चीस पक्ष, परमधाम के वो गहरे अथाह सागर जो श्री राजी के अंगों व दिल से है। सभी रूहों को सुख देने के लिए ही है। ऐसे अर्श के मालिक की साहिबी बुजरक है ऐसे पारब्रह्म, उनके आनन्द अंग श्यामा-महारानी और श्यामा - महारानी के अंग हम सब रूहों को अपनी साहिबी की पहचान करवाते हुए यूं फुरमां रहे हैः-

ए सुध अर्श में रूहों को नहीं, देखी खेल में बड़ाई रूहन।
तो खोल हकें देखाइया, ऊपर मेहर करी मोमिन।।
झूठ आगे सांच के, क्यों आवे सरभर।
नाहीं क्यों कहे आगूं है के, लगे न पटन्तर।।

अपनी इस साहिबी को देखकर खुशी क्यों न हो कि एक अक्षरातीत जिनकी साहिबी की हमें परमधाम में सुध नहीं थी उसकी पहचान करवाने के लिए हमें इस झूठे खेल में ले आये और वाणी द्वारा यूं पहचान करवा रहे हैं।

मेरे खसम का नूर है, नूर अंग नूरजलाल।
सो आवत दायम दीदार को, मेरा खसम नूरजमाल।।

जिस नूरजमाल के इशारे मात्र से करोड़ो ब्रह्माण्ड बन कर मिट जाते है। आप धनी हमारे सन्मन्ध की पहचान करवाते हुए यूं फुरमां रहे है :-

इन अर्स का खावन्द, सो धनी अपना हक।
ए देखो साहेबी अर्स की, ए मोमिनों बुजरक।।

Nijanand App

वाणी में बार-बार श्री राज जी महाराज हमें कह रहे है कि मोमिनों तुम इस माया के नहीं तुम्हारा घर परमधाम है। तुम श्री राज जी महाराज के अंग हो।

श्री महामति साहेबी हक की, मै खसम अंग का नूर।
अंग रूहें मेरा नूर है, सब मिल एक जहूर ।।

परमधाम के पच्चीस पक्ष, पुखराज पहाड़, श्री जमुना जी, माणिक पहाड़, छोटी रांग, बड़ी रांग सभी रूहों को सुख और आनन्द देने के लिए है। उस निजघर के हम मालिक है। सुन्दर साथ जी संसार में अगर किसी पत्नी का पति उच्च पद पर आसीन होता है तो उस पत्नी का रूतबा भी उतना ही बढ़ जाता है। हम तो उस साहेब की धनियाणी है जिन्होंने इस संसार में भी हमें इतनी शोभा दी। हमारे यहाँ उतरने से पहले हमारी गवाहियाँ हर ग्रन्थों में लिखवा दी। इस ब्रह्माण्ड को हम रूहों ने ही अखण्ड करना है, ऐसी कायम साहेबी बख्शी है।

सारे संसार के जीव जब सातवें दिन की लीला में बहिश्तों में कायम होगें, तो हमारे इन जीवों को जिन पर परमधाम की सुरताओ ने खेल देखा है प्रणाम करेगें। ब्रह्ममुनियों की शोभा का वर्णन तो आज हर धर्मावलम्बी गा रहा है। विचार करें कि श्री राजी महाराज ने सच्चे आशिक होने का दावा सिद्ध कर दिया, हम पर इस झूठे खेल में कुर्बान हो गए। जिस तन पर भी लीला की, अन्दर बैठकर स्वयं सब कार्य किये, पर शोभा हम रूहों को दी।

क्या हम इस शोभा, नाम (ब्रह्मसृष्टि) के अनुसार रहनी कर रहे है। दुनियां तो हमें धन-धन कह रही है। पर हमारी चाल प्रेम और सेवा वाली कहाँ है। पहले तो बृज का पगला चलकर दिखाया, आज धनी ने वाणी, निजबुध साथ दे दी तो जहाँ हमारा हर पल धनी और निजघर के सुखों में व्यतीत होना चाहिए हम माया की चाह में गुजार रहे है। सुध आने के बाद भी हमारा प्रयास निजानन्द सम्प्रदाय की राह पर बढ़ने के लिए कम और माया के रिश्ते-नाते निभाने के लिए ज्यादा है। जिस साहिबी, मरातबे के लिए वाणी में हमारी पहचान लिखी है। उसके अनुसार तो हमें एक पल के लिए भी धनी, अपने पिया को नहीं भूलना चाहिए। जिन सुखों की धनी हमें याद दिला रहे है हम उन्हीं सुखों की लज्जत में भीगे रहें तो जब हमारा ये तन छुटेगा हम अपने धनी के चरणों में जग जायेगें। मूलमिलावे में हमारी परआतम उठेगीं। कुछ तो शर्मिन्दगी कम होगी।

"प्रणाम जी"

चरणरज

श्रीमती कंचन आहुजा

जयपुर

Nijanand App